साइबरस्पेस और मीडिया

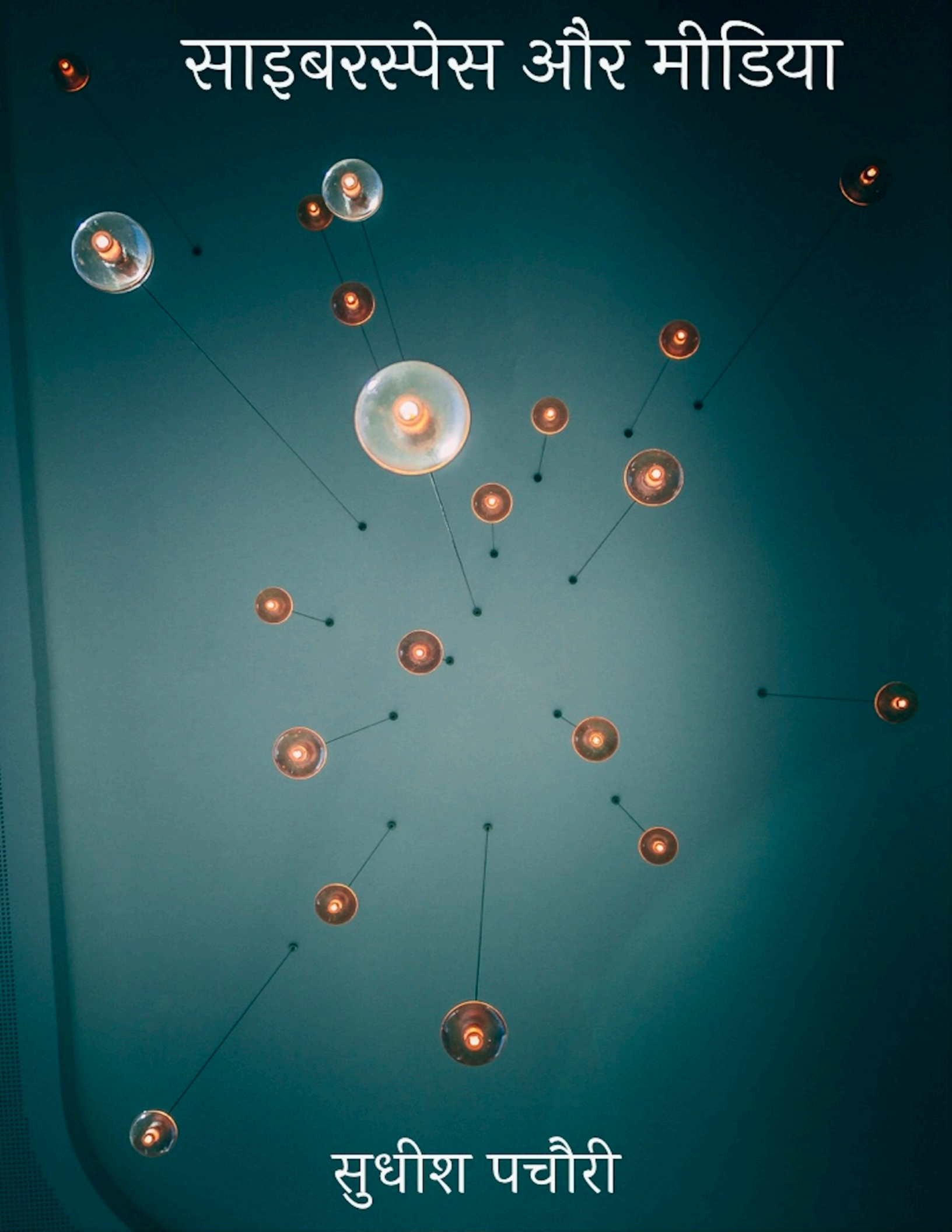

सुधीश पचौरी

साइबर-स्पेस और मीडिया

सुधीश पचौरी

भूमिका

'साइबर-स्पेस' वह 'स्पेस' (शून्य या देश) वह जगह है जो कम्प्यूटर-कान्ति और इंटरनेट के द्वारा निर्मित 'सूचना सुपर हाइवे' ने संभव की है। यह एक ऐसा 'देश' है जो भौगोलिक सीमाएँ नहीं मानता, राजनीतिक सीमाएँ नहीं मानता और अपने मूल चरित्र में अति चंचल एवं भूमंडलीय है। कम्प्यूटर के मॉनीटर पर जो दिखता है और जिस गति से वह जगत में काम करता है आम भाषा में उसके बनाए शून्य को और अर्थ को साइबर-स्पेस कहते हैं। यह स्पेस सामने होता है। यह बनता है लेकिन इस पर कोई भी पुराने कानून नियम लागू नहीं होते। यह काल और देश के ज्ञान में बुनियादी किस्म का परिवर्तन कर देता है। धरती एक 'माउस' के सहारे रौंदी जा सकती है। सूचना की गति क्षिप्रतम हो जाती है। पूरा भूमण्डल एक मॉनीटर में सिमट जाता है और फिर भी दुनिया को प्रभावित करता है। वह एक नई जीवन शैली में ढालता है। ज्ञान के सारे उपादान इस स्पेस में बनते बिगड़ते हैं। सूचना का रंग और चरित्र बदल जाता है। कभी इंटरनेट पर जाएँ और अपने स्थानीय स्पेस को अपने नगर के स्पेस को भूतल भर से जुड़ा देखें तात्कालिक होता देखें और निर्णायक बनता देखें। 'ई-कामर्स' देखें और 'सोने' के गिरते भाव को देखें। देखें कि पिछली सदियों में दुनिया मुद्रा को सोने से तोलती थी अब सूचना सुपर हाईवे से संबद्ध उद्योग के शेयरों से तोली जा रही है। इक्कीसवीं सदी का समय इसी स्पेस से तय होने जा रहा है। इस स्पेस को आप पुराने ऐंद्रिक ढंग से

पकड़-छू नहीं सकते न नियंत्रित ही कर सकते हैं। नए कानून बनाने के लिए इस स्पेस को नियमित करने के लिए दुनिया- भर के कानूनवेत्ता सिर मार रहे हैं। अकेली 'ई-कामर्स' ने व्यापार और उससे संबद्ध तमाम व्यापार का नक्शा बदलना शुरू कर दिया है। प्रिंट मीडिया पर उसका खास असर पड़ा है। विज्ञापन के क्षेत्र में उसे झटका लगा है। इंटरनेट पर अखबार जाने लगे हैं क्योंकि इंटरनेट ने सिर्फ विज्ञापन की वेबसाइटें बनाई हैं और वे विज्ञापन खींच रही है। प्रिंट मीडिया में खासकर अमरीका और यूरोप के प्रिंट मीडिया में घबराहट देखी जा सकती है। अखबार के इंटरनेट पर जाने से उनके नए रंग रूप बन रहे हैं। विज्ञापन स्वतन्त्र चैनल बना रहे हैं। इस स्पेस का एक असर व्यापार की प्रविधि पर है जो दूसरा सूचना के क्षेत्र में यानी मीडिया के क्षेत्र में है। तेजी से मीडिया का चोला बदल रहा है। सूचना के अब तक के खेलों के नियम बदल रहे हैं। यह साइबर-स्पेस की लीला है।

इस पुस्तक में कुछ लेख इस साइबर-स्पेस और मीडिया के एवं भाषा के बदलने को परिभाषित करने की कोशिश करते हैं। हिन्दी में यह अपने तरह का पहला प्रयत्न कहा जा सकता है। समय-समय पर मीडिया के स्वरूप परिवर्तन का अध्ययन करने वाले इन लेखों में ग्लोबल-मुक्त-बाज़ार और मीडिया के सम्बन्धों को छाना फटका गया है। मीडिया अब मिशन नहीं है उद्योग है प्रोफेसन है इस तथ्य को झुठलाया नहीं गया है और इस नए वातावरण में मीडिया के नए लक्षणों को पहचानने की कोशिश की गई है। इक्कीसवीं सदी में मीडिया क्या स्वरूप प्राप्त करेगा उसके कुछ संकेत यहाँ हैं।

विज्ञापन एक कारपोरेट कला ही नहीं मीडिया और हमारे सूचना जगत का निर्माता हो चला है। खबर विचार और मनोरंजन एकमेक होने लगे हैं। 'प्रसार भारती' से 'सरकार भारती' के बीच फँसा दूरदर्शन इन स्थितियों में कैसे पिछड़ रहा है और अनेक चैनलों के बीच वह कितना बेचारा होता जा रहा है। इसकी झलक भी यहाँ है। किताबों का समाज बदल रहा है। हिन्दी का भूगोल और चरित्र तेजी से बदल रहा है क्योंकि साइबर-स्पेस में हिन्दी 'ग्लोबल' बन रही है। इसकी पहचान की कोशिश यहाँ है जो परंपरागत ढंग से माध्यमों और हिन्दी के बारे में सोचने के तरीकों को समस्याग्रस्त करती है।

प्रिंट-मीडिया ने, टीवी ने और अब साइबर-केसी-मीडिया ने हमारे समाज के नए जन क्षेत्र बनाए हैं। महिलाओं के लिंग-भेद की चेतना और दलितों अल्पसंख्यकों में पहचान और सत्ता की चेतना बढ़ाई है। एक नए किस्म की स्वतन्त्रता के भाव का उदय हुआ है। साइबर-स्पेस पर कोई भी तानाशाह निर्णायक अंकुश नहीं लगा सकता। यह आजादी का ग्लोबल संस्करण है जो साइबर-स्पेस में मीडिया के आने के बाद पैदा हुआ है। हमारे ज्ञान का और अनुभव का निर्णायक बिन्दु यही है। इसे पढ़ना-समझना सभी मीडिया विद्यार्थियों के लिए जरूरी है।

हिन्दी में पत्रकारिता के जो पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं, वे इस नए स्पेस से बदलती बनती पत्रकारिता की नई चुनौतियों से अनभिज्ञ है। माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल के लिए इस लेखक द्वारा सोचा गया पत्रकारिता के नए

पाठ्यक्रमों का एक प्रस्तावित ढाँचा यहाँ दिया जा रहा है जो अन्यत्र के लिए भी विचारणीय कहा जा सकता है। मौजूदा पत्रकारिता पाठ्यक्रम एकदम बदल दिए जाने चाहिए और उन्हें नई चुनौतियों के मुकाबले का होना चाहिए। पत्रकारिता अब एक बड़ा व्यवसाय और पेशा है। ऐसा होकर भी वह समाज निरपेक्ष नहीं हो सकता इसलिए उसे नई चुनौतियों को समझना चाहिए और नए नियम नई मर्यादाएँ बनानी चाहिए।

समय-समय पर लिखी गई इन टिप्पणियों में पाठकर्ता को कहीं बहुत स्पष्ट कहीं बहुत छिपी हुई एकसूत्रता मिलेगी और साथ हर टिप्पणी और किसी एक समस्या को सम्बोधित करेगी। पाठकर्ताओं ने इस लेखक की पत्रकारिता सम्बन्धी ऐसी एकत्र-टिप्पणियों की अक्सर माँग की है। उम्मीद है कि यह किताब उन्हें कुछ उत्तेजित करेगी कुछ शांत करेगी।

उन तमाम पत्र-पत्रिकाओं के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिनमें ये टिप्पणियाँ समय-समय पर छपी हैं और उन मित्रों का जिन्होंने इस बन्दे को 'मीडिया एक्सपर्ट' टाइप का कुछ समझ लिया है और हमेशा लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

-सुधीश पचौरी

27.8.1999